लोग खोखले स्वच्छता अभियान व बरसाती पानी से परेशान प्रशासन का जोर गंदगी का खत्ता बनाने तक

फ़रीदाबाद (म.मो.) भाजपा की केन्द्रीय व राज्य सरकारों को स्वच्छता अभियान का ढोल पीटते, नाटकबाज़ी करते व फ़ोटो खिंचाते चार वर्ष बीत गये। स्वच्छता के नाम पर तो विशेष टैक्स लगा कर सैंकड़ों करोड़ की वसूली भी कर ली गयी है। नाटकबाज़ी दिखाने के लिये प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री खट्टर ने हाथ में झाड़ू के साथ अपने फ़ोटो एवं वीडियो भी खूब वायरल करा दिये, लेकिन स्वच्छता तो दूर गंदगी बढ़ती ही जा रही है।

यहां का नगर निगम टैक्स वसूलने, ग्रांटें हड़पने, अपनी जायदादें बेच खाने में तो कोई कसर नहीं छोड़ता लेकिन गंदगी के ढेर हटाना अपना दायित्व नहीं समझता। बल्लगगढ़ के मिल्क प्लांट रोड पर 4 एकड़ के एक पुराने जोहड़ को ही नगर निगम ने डम्पिंग ग्रांऊंड यानी गंदगी का खत्ता बना दिया। निगम ने यह भी नहीं सोचा कि इसके आस-पास बसी भाटिया कॉलोनी, कुंदन कॉलोनी, भीमसेन कॉलोनी, पंजाबीवाड़ा व अहीरवाड़े के निवासियों का इससे क्या हाल होगा? मारे दुर्गंध के यहां के लोग़ों का जीना मुहाल हो गया!

मोदी व खट्टर के स्वच्छता अभियान की 4 साल तक बाट जोहने व निगम प्रशासन द्वारा साफ़ इन्कार कर दिये जाने के बाद बीते रविवार उक्त कॉलोनियों के निवासियों ने स्वयं सफ़ाई का बीड़ा उठाया। यह कोई छोटा काम नहीं था। इसके लिये सैंकड़ों नागरिकों के श्रमदान के अलावा एक जेसीबी मशीन व 8 ट्रैक्टर ट्रालियां काम पर लगी। करीब 8 घंटे की कड़ी मेहनत के बाद सफ़ाई का काम पूरा हो पाया।

साफ़ाई तो खैर जैसे-तैसे हो गयी। गंदगी का बरसों पुराना खत्ता भी हट गया। लेकिन अब बड़ा सवाल यह उठता है कि 4 एकड़ के इस प्लॉट का क्या होगा? करोड़ों रुपये की इस जायदाद पर जो भू माफ़िया गिद्ध दृष्टि जमाये बैठे हैं, उनसे इसको कैसे बचाया जायेगा? कुछ लोग तो यह मान कर भी चल रहे हैं कि इस सफ़ाई अभियान के पीछे भी उन्हीं भू माफ़ियाओं का हाथ है जिनका खानदानी पेशा सार्वजनिक सम्पत्तियां कब्ज़ाने का रहा है। सचेत नागरिकों को ऐसे किसी भी प्रयास को विफ़ल करने के लिये संगठित होकर इसे सार्वजनिक स्थल-पार्क आदि के लिये विकसित करना चाहिये।

थाना एनआईटी से एसएचओ सुभाष गया, लेकिन टंडन की दलाली कायम रही

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 1 जुलाई को 5 एन/17 ए में रहने वाली किरण शर्मा धर्मपत्नी सुनील दत्त शर्मा ने थाना एनआईटी में एक लिखित शिकायत दी कि एन.एच 1 नम्बर निवासी मनोज शर्मा जो कई बार मेरे पति के साथ मार-पीट व गाली-गलौज कर चुका है व रंजिश रखे हुये है। आज मैं व मेरी बहू मनीषा अपने घर के बाहर बैठकर कपड़े तय लगा रहे थे। तभी मनोज शर्मा वहां आकर हम दोनों सास, बहु को गंदे-गंदे इशारे करने लग गया। मुझे कहने लग गया कि तेरे पति सुनील को जान से मारुंगा। जिसको लेकर ब्लॉक वासियों ने उसे पकड़ कर थाने का रुख किया। थाने में पीड़ित महिला को परिवार के साथ ब्लॉक एनआईटी में तैनात एएसआई हरविंद ने देखा तो मनोज शर्मा को धमका कर बैठा दिया। पीड़ित महिला को आश्वासन देने लगा कि अभी इस मनोज शर्मा को हवालात में भेजता हूं। लेकिन तभी मनोज शर्मा के किसी जानकार ने शराब माफ़िया तनेन्द्र टंडन को फ़ोन कर सूचना दे दी। जिस पर टंडन अपने चेले विपिन हलवाई व अन्य दो-तीन गुर्गों के साथ वहां आ पहुंचा।

एएसआई हरेन्द्र ने टंडन के पहुंचते ही इनके लिये अपनी कुर्सी तक छोड़ दी। टंडन ने आते ही पूछा क्या मामला है? वहां मौजूद दोनों पक्षों को लगा कि वह (टंडन) पुलिस का कोई बड़ा अफ़सर है। टंडन ने एएसआई को आर्डर दिया कि दोनों पक्षों से पूछ लो अगर समझौता करते हैं तो ठीक नहीं तो दोनों पर 107/151 का मामला दर्ज कर दो। जिस पर तुरंत दोनों पक्षों को एएसआई ने कहा, बैठ जाओ कल अपनी जमानत करवा लेना। इस पर किरण शर्मा के बेटे लोनी शर्मा ने एएसआई हरेन्द्र को कहा कि अभी दस मिनट पहले तो मनोज शर्मा पर महिला अपराध का मामला दर्ज कर रहे थे। अब हमारे परिवार पर मामला दर्ज कर रहे हो? इस पर एक पुलिस अधिकारी की तरह टंडन ने धमकाना शुरू कर दिया।

पीड़ित पक्ष दस मिनट बाद मजबूरन समझौता करने के लिये राजी हो गया। इसके बाद टंडन ने एसएसआई को हिदायत दी कि दोनों पक्षों से फ़ीस वसूली कर ले यह कह कर वह चला गया। मनोज शर्मा ने तो तुरंत 8000 रुपये निकालकर हरेन्द्र एएसआई को दे दिये। जबकि किरण शर्मा परिवार ने एएसाई के तमाम हरकतों के बावजूद उसे कुछ नहीं दिया।

जिसके सिर पर विधायक सीमा त्रिखा का वरदहस्त हो तो हरेन्द्र जैसा एएसआई क्यों न उसे सलाम करे। मुख्यमंत्री खट्टर के रोड शो के दौरान सारे शहर ने देखा था कि शहर की मेयर तो सड़क पर पैर घसीट रही थी और पुलिस का यह दल्ला विधायक सीमा के पति अश्वनी त्रिखा के साथ एक खुले वाहन पर कुर्सी लगाये बैठा था। पुलिस एवं प्रशासन के लिये इतना ही इशारा काफ़ी होता है।

ग्रीन फील्ड में खेत उजड़ने के बाद चिड़िया उड़ाने पहुंची विधायक सीमा

फ़रीदाबाद (म.मो.) 'दूध से जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है' वाली कहावत को चरितार्थ करती विधायक सीमा त्रिखा ने बीते सप्ताह नगर निगम सभागार में बिजली के उच्चाधिकारियों की बैठक बुलाई। चीफ़ इन्जीनियर से लेकर उनके क्षेत्र के एसडीई तक बुलाये गये थे।। बैठक में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतें तुरंत सुनी व हल की जाये।

बिजली अधिकारियों ने भी आश्वासनों के पुल बांध दिये कि रात हो या दिन हर कम्पलेंट सेंटर पर शिकायत सुनने व दूर करने वाला स्टाफ़ मौजूद रहेगा जबकि वास्तविकता यह है कि न सेंटरों पर कोई फ़ोन उठाता है ओर न ही दुरुस्त करने वाला पर्याप्त स्टाफ़ है। जो कच्चा-पक्का स्टाफ़ है भी उसके पास पर्याप्त सामान नहीं है।

बिजली को लेकर सीमा की जो नींद उड़ी हुई है उसका असली कारण ग्रीनफ़ील्ड कॉलोनी वाला कांड है जिसमें बिजली की शिकायत करने सीमा के द्वारे आये 18 लोग़ों को सीमा ने पुलिस द्वारा पिटवा-छितवा कर हवालात में बंद करवा दिया था। इससे हुई फ़जीहत से विधायक सीमा त्रिखा से कहीं अधिक पार्टी नेतृत्व परेशान है।

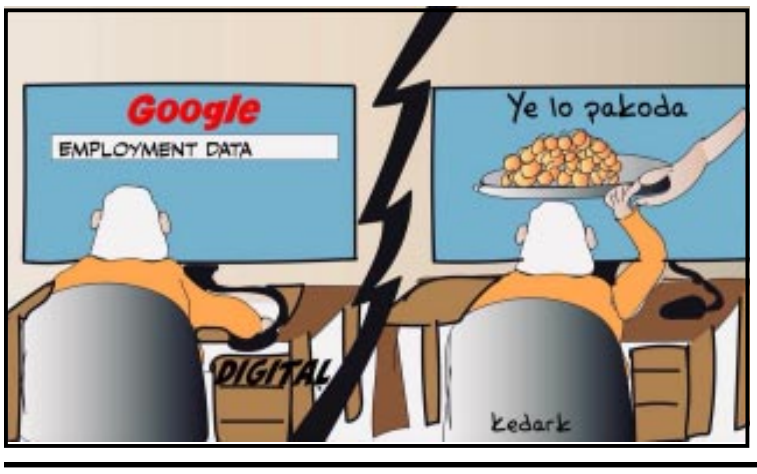

बिजली अधिकारियों की इस बैठक में ग्रीनफ़ील्ड की बिजली समस्या दूर करने के नाम पर वहां की तमाम बिजली मेंटेनेंस बिजली विभाग ने सम्भाल ली है जो पहले प्राइवेट कम्पनी के हाथ में थी। प्रश्न यह उठता है कि यह काम क्या पहले नहीं हो सकता था? क्या 18 लोग़ों के हवालात में जाने के बाद ही यह काम होना था?

इसके उपरांत बिजली अधिकारी आश्वासन दे रहे हैं कि अब वे स्थिति को सम्भाल लेंगे। लेकिन यह सम्भव नहीं है, क्योंकि वहां की तमाम लाइनें व ट्रांसफ़ार्मर बुरी तरह से ओवर-लोडिड हैं। इसके अलावा वहां 66 केवी का सब स्टेशन बनाने की सख्त जरूरत है। ये सभी काम मौजूदा सरकार एवं सीमा त्रिखा के कार्यकाल में तो पूरे होने से रहे। लिहाजा वहां बिजली का संकट तो ज्यों का त्यों चलता रहेगा।

हालात बाकी शहर के भी अच्छे नहीं हैं। क्योंकि सरकार बिजली विभाग के लिये जो सामान खरीदती है वह मोटे कमीशनखोरी के चक्कर में निहायत ही घटिया होता है जिसकी वजह से फ़ॉल्ट अधिक पड़ते हैं; दूसरी ओर फ़ाल्ट ठीक करने के लिये जो स्टाफ़ लगाया जाता है वह बहुत कम होता है। यदि सामान बढिया क्वालिटी का लगा हो तो कम स्टाफ़ से भी काम चल सकता है।

चन्द मिनटों की बरसात ने कर दिया शहर जाम

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीते सोमवार चन्द मिनट बारिश क्या हुई कि शहर भर में जाम लग गया। करोड़ों रुपये खर्च करके जलभराव रोकने के जो दावे निगम प्रशासन कर रहा था, वे सब खोखले साबित हो रहे हैं। स्वत: सिद्ध है कि हर साल की भांति इस बार भी जल निकासी का यह बजट निगम के निकम्मे अधिकारी गटक गये।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर दिल्ली से बल्लबगढ जाने वाली सड़क पर अजरोंदा मैट्रो स्टेशन तक उन वाहनों की लम्बी कतार लगी थी जिन्हें फ्लाईओवर के नीचे से होकर नीलम चौक की ओर जाना था। कारण यह कि एक तो पुल की बगल वाली सड़क आधी अधूरी बनी है, दूसरे वहां बरसात के बिना भी अक्सर पानी खड़ा रहता है। परिणामस्वरूप थोड़ी सी बारिश में ही इतना जल भराव हो गया कि वाहनों का चलना दूभर हो गया। खास बात यह भी है कि इस पानी को निकालने की कोई पर्याप्त व्यवस्था भी नहीं है। यह पानी समय के साथ नहीं सूखेगा।

लगभग ऐसी ही स्थिति बाटा मोड़ पर है। राजमार्ग से बाटा चौक की ओर जाने वाले वाहनों को राजमार्ग के फ्लाई ओवर के नीचे से निकलने के लिये लम्बी लाइन लगानी पड़ती है। कारण वही कि पुल के बगल वाली सर्विस लेन खुद पड़ी है। जबकि वहां जगह की कोई कमी नहीं है। इस सर्विस लेन व पुल के बीच बची 10 फ़ीट जगह को भी गत 8 माह से खोद कर छोड़ा हुआ है ताकि लोग सड़क के अभाव में इस कच्ची जगह का प्रयोग न कर पायें। यदि नारियल फ़ोड़ने वाले सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री की नीयत व समझ सही हो तो उक्त दोनों स्थानों की समस्या पलक झपकते ही हल हो जायें; परन्तु समस्या तो इन्हें हल करनी ही नहीं है।

इसके अलावा शहर के लगभग हर चौक पर जल भराव देखा गया। एनएचपीसी चौक व ओल्ड फ़रीदाबाद वाले दोनों रेलवे अंडर पास पूरी तरह पानी में डूबे हुये थे। जो कोई वाहन गलती से उसमें चला गया उसका वहां से निकलना दूभर हो गया। कच्ची कॉलोनियों की तो बात छोड़िये 'हूडा' के तमाम पॉश सेक्टरों में जगह-जगह पानी खड़ा हो गया। इनमें से अधिकांश जगह ऐसी हैं जिन पर से पानी बह कर कहीं जा ही नहीं सकता, उसे तो वहीं सूखना है यानी जब तक बरसातें रहेंगी वहां जलभराव रहेगा ही।

टाऊन के एनएच 2,3,5,व 1 नम्बर के निवासी बरसाती पानी का भराव तो झेल ही रहे हैं, साथ में सीवर जो बैक मार रहे हैं, उससे घरों में गंदा पानी घुस गया है। दरअसल इस शहर की मुख्य समस्या ही सीवरेज सिस्टम है। चाहे वे 'हूडा' के नव निर्मित सेक्टर हों अथवा एनआईटी के पुराने वार्ड हों। बरसात के दौरान बरसाती पानी ने सीवेज के घुल जाने से बरसाती पानी दूषित होकर सड़ने लगता है। इससे सारा वातावरण दुर्गंधमय हो जाता है। समझा जा सकता है कि ऐसे में वहां रहने वालों की हालत क्या होगी?

यह सब तो तब है जब फ़रीदाबाद को स्मार्ट सिटी बनाया जा रहा है। दरअसल काम कोई शासक-प्रशासक करना नहीं चाहता। बस किसी न किसी बहाने इनको मोटा पैसा मिलता रहे जिससे ये लोग विदेश यात्रायें कर सकें व अपनी जेबें भर सकें।

कोर्ट में पीएफ़ का केस हारे 3000 श्रमिकों का 13 करोड़ डूबा

फ़रीदाबाद (म.मो.) पीडी लखानी ग्रुप की कम्पनियों के करीब 3000 मज़दूरों के वे 13 करोड़ डूब गये जो लखानी पीएफ़ (भविष्य निधि) के नाम पर उनके वेतन से वर्षों तक काटता रहा था। भारत सरकार के कानून के अनुसार प्रत्येक कम्पनी को, जहां 20 से अधिक श्रमिक काम करते हों, उनके वेतन का 12 प्रतिशत काट कर, उतनी ही रकम अपनी ओर से मिला कर पीएफ़ कार्यालय में जमा करानी होती है।

सरकारी कानून के भरोसे मज़दूर अपने वेतन से पीएफ़ कटवा कर खुश हो लेता है, लेकिन जब कोई लखानी जैसा मालिक उस पैसे को हड़प जाता है तो उसके पास सिर्फ़ माथा पकड़ कर रोने को और कुछ नहीं रह जाता। हां रह सकता था यदि उन्होंने अपने आप को संघर्ष के लिये लामबंद कर लिया होता तो।

ग़ैरलामबंद मज़दूरों का एक मात्र भरोसा रह जाता है पीएफ़ विभाग जिसका कर्त्तव्य है कि वह लखानी जैसे चोर के खिलाफ़ समय रहते तुरंत भारतीय दंड संहिता की धारा 406 व 409 के तहत मुकदमा दर्ज कराये। लेकिन भ्रष्ट राजनेताओं के भ्रष्ट विभाग में भी तो भ्रष्टाचारियों का ही बोलबाला रहता है। ये भ्रष्ट अधिकारी मालिकान के खिलाफ़ कोई कार्यवाही करने की बजाय उसी लूट में हिस्सा-पत्ती करके उसे बचाये रहते हैं।

इस विभाग ने पहले तो 3000 श्रमिकों का 13 करोड़ गबन होने दिया फ़िर जब अदालत में केस डाला तो उस पर सीजेएम ने 14.6.18 को संदेह का लाभ देते हुये केस को खारिज कर दिया। यानी 3000 श्रमिकों के वेतन से जो पैसा लखानी ने काट कर गटक लिया वह संदेह के लाभ से हज़म हो गया। जानकार बताते हैं कि संदेह का लाभ इसलिए मिल पाया कि पीएफ विभाग के पास ना तो पूरा रिकार्ड था और ना ही रिकवरी कराने के लिए नीयत साफ की। इन हालात में श्रमिकों का पूरा पैसा पीएफ विभाग एवम् भारत सरकार को अदा करना चाहिए।

जन सूचना बराए बेदखली

मैं शीलादेवी विधवा जयभगवान, निवासी मकान नं. 122 व कीलपुरा सदर बाजार करनाल, अपने लड़के सन्नी व पुत्रवधु रजनी को अपनी चल व अचल सम्पति से बेदखल करती हूं। क्योंकि यह दोनों मेरे कहने से बाहर हैं और मुझे इनसे खतरा है। जो भी व्यक्ति इन दोनों से कोई लेन-देन करेगा वह स्वयं जिम्मेदार होगा।